प्रतिलेखन संख्या 18

उपाध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन कर रहा था कि जब हम कोई प्रश्न उठाएँ तो यह देखें कि हम इसमें

से कहाँ तक बढा सकते हैं। किसी चीज का मूल्य क्या हो, महँगी पडे या सस्ती पडे, इसको हमें

विशेष नहीं देखना है। गाँधी जी ने कितनी ही बार हम लोगों को यह बात समझाई कि मूल्य किसी

चीज का रुपए–पैसे में क्या है, यह कोई महत्व की बात नहीं है। आप जानते होंगे कि एक वस्तु जो

कि हमारे देश में बहुत सस्ती मिलती है, वही दूसरे देश में महँगी मिलती है।

इतना निवेदन करने के बाद अब मैं श्रम विभाग की जो रिपोर्ट है, उसकी एक मद की ओर तुरंत आ

जाता हूँ। जैसा कि पहले मैंने कहा मैं समझता हूँ कि हमारे इस श्रम विभाग का महत्व

दिन–प्रतिदिन बढेगा। बहुत–से प्रश्न हैं जिनकी तरफ आपका ध्यान भी नहीं है, उन प्रश्नों को

आपको लेना पड़ेगा। आज आपका श्रम विभाग अधिकतर औद्योगिक श्रमिकों की ओर ध्यान दे रहा

है। अभी हमारे माननीय सदस्य ने जो खेतिहर मजदूरों की दशा सुधारने की ओर भी आपका ध्यान

दिलाया था और बतलाया था कि आज उनकी कैसी खराब हालत हो रही है, मैं उनसे पूरी तरह

सहमत हूँ। हमारी सरकार का ध्यान देहाती श्रमिकों की ओर नहीं गया है। उनकी बडी बुरी हालत

है। आने उनकी दशा सुधारने के लिए क्या किया है? मैं पूछना चाहता हूँ कि जो लाखों और करोडों

आदमी देहातों में बेकार बैठे हुए हैं उनको मजदूरी और काम दिलाने के लिए आप क्या कर रहे हैं?

करीब साढ़े लाख आदमी नौकरियों के लिए प्रार्थी हैं जैसा कि रिपोर्ट में लिखा है। इनके अतिरिक्त

कितने ही लाखों और करोड़ों आदमी देहातों के बेकार बैठे हुए हैं और कितने ही आधी बेकारी की

हालत में हैं और श्रम विभाग उन बेकारों और आधी बेकारी वालों की संख्या पता लगाने में असमर्थ

है उनकी संख्या हमको कहीं नहीं मिलती है। मेरा निवेदन यह है कि हमारे देश में बेकारी बहुत

अधिक है। जितना अधिक हम बेकरी को दूर कर सकें उतना ही अधिक हम अपने देश और समाज

को सुखी बनाएँगे। इस कार्य में आपका और आपके विभाग का दायित्व बहुत अधिक है। जो भी नया

काम आरंभ होता है, उसका दायित्व श्रम विभाग पर रहता है। धन जनता की भलाई के लिए खर्च

होना चाहिए।